

# अलवर शहर के नगरीय विकास का भूस्थानिक विश्लेषण

## सारांश

नगरीय केन्द्रों के एकत्रीकरण में निरन्तर वृद्धि के परिणामस्वरूप विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हो रही है। यह वृद्धि मुख्यतः उन विकासशील देशों में हो रही है, जहाँ संसाधन तो सीमित हैं, परन्तु जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र है। जिस कारण संसाधनों का तीव्र गति से दोहन हो रहा है। विकसित एवं विकासशील देशों में असन्तुलित नगरीयकरण की समस्या अनुभव की जा रही है। जिसका मुख्य कारण रोजगार के केन्द्रों का नगरों में होना व औद्योगिकरण है तथा नगरों में नगरीयकरण बढ़ने का एक प्रमुख कारण वहाँ के आकर्षक कारक भी है। नगरों में विभिन्न स्तरों में बढ़ते हुए नगरीयकरण से उनका नगरीय विकास तीव्र गति से हो रहा है।

**मुख्य शब्द :** जनसंख्या वृद्धि, नगरीयकरण, नगरीय विकास, नगर का भावी स्वरूप।

## प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के मध्य के बाद नगरीय केन्द्रों के एकत्रीकरण में लगातार वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि मुख्यतः उन विकासशील देशों में हो रही है जहाँ संसाधन तो सीमित हैं परन्तु जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र है। जिस कारण संसाधनों का तीव्र गति से दोहन हो रहा है। जिनके परिणामस्वरूप नगरों में नगरीय विकास की दर निरन्तर बढ़ रही है।

नगरीयकरण का प्रारम्भ लगभग 2500 ई. पू. में सिन्धु घाटी की सभ्यता से माना जाता है। तब से लेकर अब तक निरन्तर विभिन्न स्तरों में नगरीयकरण बढ़ता जा रहा है। विकसित एवं विकासशील देशों में असन्तुलित नगरीयकरण की समस्या अनुभव की जा रही है। जिसका मुख्य कारण रोजगार के केन्द्रों का नगरों में होना व औद्योगिकरण है तथा नगरों में नगरीयकरण बढ़ने का एक प्रमुख कारण वहाँ के आकर्षक कारक भी है। नगरों में विभिन्न स्तरों में बढ़ते हुए नगरीयकरण से उनका नगरीय विकास तीव्र गति से हो रहा है।

भारत में नगरीयकरण के प्रमाण सर्वप्रथम सिन्धु घाटी सभ्यता से मिलते हैं। प्राचीन काल (700 ई. पू.) में नगरों का विकास, राजधानियों, प्रशासनिक दुर्गों तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में हुआ।

मध्यकाल (1200-700 ई. पू.) में नगरों का विकास प्रशासनिक उद्देश्य से किया गया। आधुनिक काल (1700 ई. के बाद) में नगरीय विकास को एक नई दिशा मिली और नगरों का विकास मास्टर प्लान के आधार पर किया जाने लगा। 20वीं सदी के आरम्भ में भारत की कुल नगरीय जनसंख्या लगभग 2.58 करोड़ थी जो 1931 में बढ़कर 3.52 करोड़ हो गई तथा 1961 में भारत की नगरीय जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई जो 1961 में 7.89 करोड़ से बढ़कर 1991 में 21.76 करोड़ तथा 2001 में बढ़कर 28.61 करोड़ तक पहुँच गई। 1901 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 23.38 करोड़ थी जो 2011 में बढ़कर 121.01 करोड़ हो गई। इस प्रकार भारत की जनसंख्या में 110 वर्ष में 40.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा भारत की जनसंख्या 5.07 गुणा हुई। 1901 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या 1.029 करोड़ थी जो 2011 की जनगणना में राजस्थान की जनसंख्या 6.862 करोड़ हो गई इस प्रकार 110 वर्ष में राज्य की जनसंख्या में 56.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई और राजस्थान की जनसंख्या 6.67 गुनी हो गई। अतः स्पष्ट है कि भारत के औसत की अपेक्षा राजस्थान में जनसंख्या वृद्धि का औसत अधिक रहा है जो चिन्तनीय स्थिति है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर देश व राज्य में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय नगरीय योजनाकारों ने छठी पंचवर्षीय योजना 1980 से 1985 में यह निश्चय किया कि बड़े नगरों में जनसंख्या वृद्धि के दबाव तथा नगरों के असन्तुलित विकास को कम करने के लिये निकटतम छोटे शहरों को विकसित करना होगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये अलवर शहर को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR)दिल्ली में शामिल किया



**नरेश कुमार रावत**

पोस्ट डॉक्टरल फैलो,  
भूगोल विभाग,  
राजस्थान विश्वविद्यालय,  
जयपुर, राजस्थान

गया। इस योजना को अब लघु तथा मध्यम कस्बों के एकीकृत विकास (IDSMT) के नाम से जाना जाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बड़े शहरों की ओर होने वाले ग्रामीण प्रवास का रोकना है। साथ ही इनके प्रभाव क्षेत्र में कुछ निश्चित सुविधाएँ उपलब्ध करवाकर उस क्षेत्र के साथ पूरे देश व सम्पूर्ण विश्व को संतुलित नगरीय विकास की ओर अग्रसर करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये छोटे तथा मध्यम कस्बों को कुछ नगरीय सुविधाएँ उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है, ताकि ग्रामीण लोगों का आकर्षण बड़े शहरों की ओर न हो। उपयुक्त योजना को ध्यान में रखते हुए शोध क्षेत्र अलवर शहर को दिल्ली महानगर के निकट विकसित किया जा रहा है। यहाँ पर उद्योगों का विकास किया जा रहा है। नई तकनीकी सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। शहर के विकास हेतु शहर में नगर नियोजन विभाग स्थापित किया गया है। लेकिन शहर में निरन्तर बढ़ते हुए औद्योगिकरण एवं बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव से शहर में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी उत्पन्न हो रही है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सरकारी योजनाओं के तहत विकसित किये गये नियोजित कस्बों में इस नगरीय सुविधाओं के विकास का निर्णय लेना आसान है। परन्तु तीव्र गति से अनियंत्रित विकास एवं जिन नगरों का विकास प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से हुआ है वहाँ यह निश्चित करना बहुत कठिन है कि वहाँ कौन सी सुविधायें पहले से विकसित हैं और कौन सी सुविधायें विकसित होना बाकी हैं। तथा नगर के नियोजित विकास के लिये कौन सी योजना लागू की जानी चाहिए। इसलिये प्रस्तुत शोधपत्र में अलवर शहर के नगरीय विकास, नगरीकरण योग्य क्षेत्र तथा शहर के भावी योजना क्षेत्र का अध्ययन किया गया है क्योंकि उपर्युक्त सभी बातों का अध्ययन किये बिना किसी भी नगर के भावी विकास का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

#### साहित्यावलोकन

वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप शहरों के नगरीय विकास में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। साथ ही पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इन सभी समस्याओं पर अनेक शोध कार्य किये गये हैं तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनेक शोध कार्य किये जा रहे हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में निम्न साहित्यों का सहयोग लिया गया है –

शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने जून, 2015 में स्मार्ट सिटी मिशन विवरण और दिशा निर्देश विषय पर अपना विवरण प्रस्तुत किया। जिसमें स्मार्ट सिटी क्या है? स्मार्ट सिटी की विशेषताएँ, अवधि, कार्यनीति, स्मार्ट सिटी चयन प्रक्रिया तथा स्मार्ट सिटी की चुनौतियों का उल्लेख किया। उपरोक्त सभी साहित्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधपत्र में अलवर शहर के नगरीय विकास का अध्ययन किया गया है।

कुमार मनोज ने जुलाई, 2015 में 'स्मार्ट सिटी : योजना और उसके तकनीकी पहलू' विषय पर अपना लेख साइंटिफिक वर्ल्ड नामक पत्रिका में प्रकाशित किया।

जिसमें उन्होंने सूचना एवं संचार तकनीकी के माध्यम से नगरीय विकास के परिप्रेक्ष्य में बताया।

देशवाली शौकत अली ने 2016 में "आधुनिक अधिवास प्रवृत्ति स्मार्ट सिटी – पर्यावरणीय चुनौतियाँ एवं सुस्थिर विकास" पर ज्योग्राफिकल ऑस्पेक्ट्स नामक पत्रिका में अपना लेख प्रकाशित किया। जिसमें अजमेर शहर के नगरीय विकास को स्मार्ट सेवाओं के प्रारूप तथा शहर के भावी विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।

बंसल सुरेश चन्द्र, (2017–18) नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ पुस्तक में नगर के उद्भव, विकास, समस्याओं एवं नगर के भावी विकास हेतु सुझावों का उल्लेख किया गया है।

#### अध्ययन क्षेत्र

अलवर शहर अरावली पर्वत माला की जड़ों में जयपुर व दिल्ली के बीच तथा स्वर्णिम त्रिकोण दिल्ली-आगरा-जयपुर के बीच स्थित है। यह उत्तर-पूर्व राजस्थान का एक बड़ा नगर एवं व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र है। इसी कारण भारत सरकार द्वारा समेकित विकास क्षेत्र योजना में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (N.C.R) परियोजना के अन्तर्गत अलवर नगर को क्षेत्रीय शहर के रूप में चुना गया है। जिसमें हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश के भी कुछ क्षेत्र आते हैं। अलवर शहर दिल्ली से 165 किमी., जयपुर से 151 किमी. एवं भिवाड़ी से 92 किमी. की दूरी पर स्थित है। भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र अलवर शहर को कुशल एवं अकुशल श्रम प्रदान करने में मदद करता है।

अलवर शहर 27° 34' उत्तरी अक्षांश एवं 76° 36' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। अरावली पर्वत माला इस शहर के दक्षिण-पश्चिम में विकर्ण के रूप में फैली हुई है। इस के उत्तर में हरियाणा के रेवाड़ी व गुडगाँव जिले हैं। जबकि उत्तर-पूर्व में राजस्थान का भरतपुर जिला स्थित है। पश्चिम व उत्तर-पश्चिम में क्रमशः हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला व राजस्थान का जयपुर जिला स्थित है। दक्षिण दिशा में राजस्थान के दौसा व सवाईमाधोपुर जिले स्थित हैं।

शहर की कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 2,66,203 तथा 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 3,41,383 है अतः जनसंख्या की दृष्टि से अलवर शहर का राज्य में आठवाँ स्थान है।<sup>1</sup> शहर का जनसंख्या घनत्व 437 प्रति वर्ग कि.मी. है तथा लिंगानुपात 889 महिलाएँ प्रति एक हजार पुरुषों पर है। शहर में 0-6 आयु वर्ग के बच्चों का लिंगानुपात 837 है। शहर की कुल साक्षरता दर 86.15 प्रतिशत है। जिसमें 85.08 प्रतिशत पुरुष तथा 56.78 प्रतिशत महिलाएँ हैं।

2001 की जनगणना के अनुसार शहर की दशकीय वार्षिक वृद्धि दर 26.68 प्रतिशत है जबकि राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर 28.41 प्रतिशत है और भारत देश की दशकीय वृद्धि दर 21.34 प्रतिशत है इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो अलवर शहर की वार्षिक वृद्धि दर देश की जनसंख्या वृद्धि दर से भी अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार शहर की कुल दशकीय वार्षिक वृद्धि दर 22.7 प्रतिशत है। जो 2001 की दशकीय वृद्धि दर से अधिक है।

**शोधपत्र के उद्देश्य**

1. अलवर शहर के नगरीय क्षेत्र का अध्ययन करना।
2. शहर के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र का अध्ययन करना।
3. शहर के भावी योजना क्षेत्र का अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पनाएं**

1. अलवर शहर में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण औद्योगिकरण की समस्या निरन्तर बढ़ रही है।
2. अलवर शहर में बढ़ते हुए औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप नगरीकरण का स्वरूप निरंतर बदल रहा है।

**शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोधपत्र में द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। शोधकार्य से सम्बन्धित सभी प्रकार के द्वितीयक आँकड़ों का संकलन नगर नियोजन विभाग, अलवर से किया गया है। मानचित्रण एवं सांख्यिकीय ग्राफिकल विधि द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण कर प्रदर्शित किया गया है।

**अलवर शहर का नगरीय क्षेत्र**

अलवर शहर के नगरीय क्षेत्र के भावी विकास की सम्भावना का निर्धारण, वर्तमान भौतिक विशेषताओं, विकास की प्रवृत्ति एवं दिशा को ध्यान में रखकर किया गया है। अलवर के पश्चिम में अरावली पर्वतमाला की ऊंची पहाड़ियाँ हैं, जो इस दिशा में शहरी विकास की सीमा निर्धारण करती हैं। वर्तमान शहरी विकास तीन मुख्य सड़कों के साथ लगते हुए क्षेत्रों में होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। उत्तर में बहरोड़-तिजारा रोड पर वर्तमान में सबसे अधिक विकास हो रहा है। नगर विकास न्यास द्वारा भी तिजारा रोड एवं बहरोड़ रोड के बीच के क्षेत्र में कई आवासीय योजनाएँ प्रस्तावित की गई हैं, जिनमें गुलमोहर योजना, दीनदयाल नगर, शालीमार, विज्ञान नगर आदि प्रमुख हैं। अतः तिजारा एवं बहरोड़ रोड का क्षेत्र, भविष्य में विकास की एक प्रमुख दिशा होगी। पूरब दिशा में पुरानी दिल्ली रोड पर, नगर विकास न्यास की, त्रिवेणी नगर, रोहिणी नगर, साकेत नगर, अरावली विहार आदि आवासीय योजनाएँ प्रस्तावित हैं। इसी तरफ न्यास की वर्तमान बड़ी आवासीय योजनाएँ जैसे सूर्य नगर, वैशाली नगर, अम्बेडकर नगर आदि विकसित की गयी हैं। अतः दिल्ली रोड पर भविष्य के विकास की सम्भावना बनी हुई है। दक्षिण में राजगढ़ रोड एवं जयपुर रोड के साथ अधिकतर रिसार्ट होटल एवं शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना हुई है। दक्षिण-पूर्व में ईटराना एवं मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र के कारण विकास सीमित है। राजगढ़ रोड से बहरोड़ रोड तक नया बाईपास बन जाने के कारण अधिकतर विकास बाईपास रोड के समीपवर्ती क्षेत्रों में हो रहा है। उत्तर-पूर्व में ही तुलेड़ा रोड के साथ द्रुतगामी रेल सेवा के स्टेशन भी स्थापित होने की सम्भावना है।

**अलवर शहर में नगरीयकरण योग्य क्षेत्र**

2011 की जनगणना के अनुसार अलवर शहर की जनसंख्या 3,81,400 लाख है तथा वर्ष 2031 में अलवर शहर की प्रस्तावित जनसंख्या 760000 होने का अनुमान है। इस प्रकार अलवर शहर में 3,78,600 अतिरिक्त जनसंख्या की वृद्धि होगी। अतः भविष्य में अतिरिक्त जनसंख्या के रहने, कार्यस्थल, आमोद-प्रमोद एवं अन्य सामुदायिक सुविधाओं हेतु अधिवासित भूमि का प्रावधान किया जाना आवश्यक रहेगा। सामान्य नगर नियोजन के मानदण्डों को ध्यान में रखते हुए, प्रस्तावित नगरीयकरण योग्य क्षेत्र का घनत्व 65 व्यक्ति प्रति हैक्टेयर के आधार पर कुल 5953 हैक्टेयर अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गयी है। वर्ष 2011 में 5807 हैक्टेयर नगरीयकृत क्षेत्र फैला हुआ था अतः वर्ष 2031 तक कुल नगरीयकरण योग्य क्षेत्र करीब 11760 हैक्टेयर अनुमानित किया गया है।

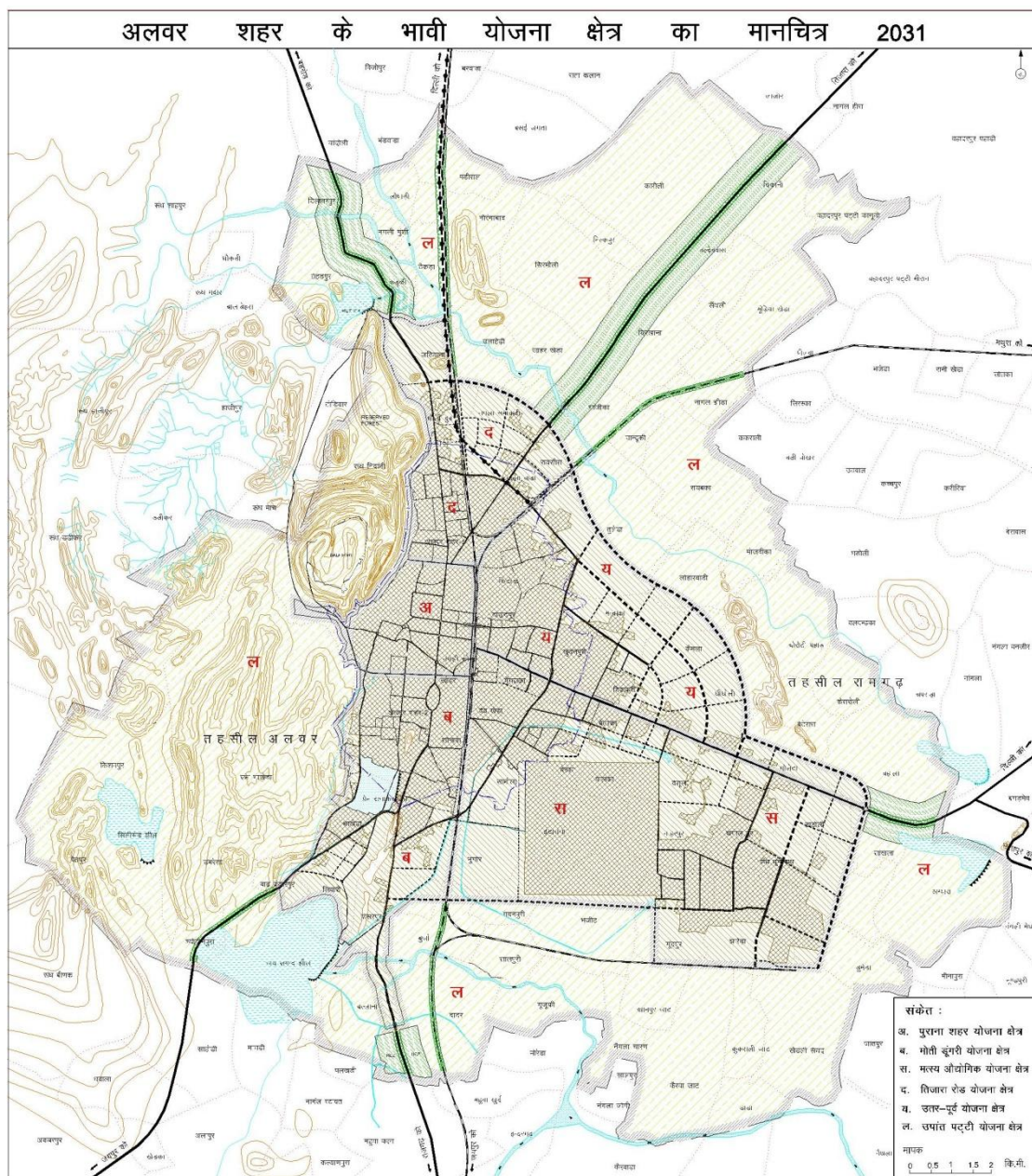
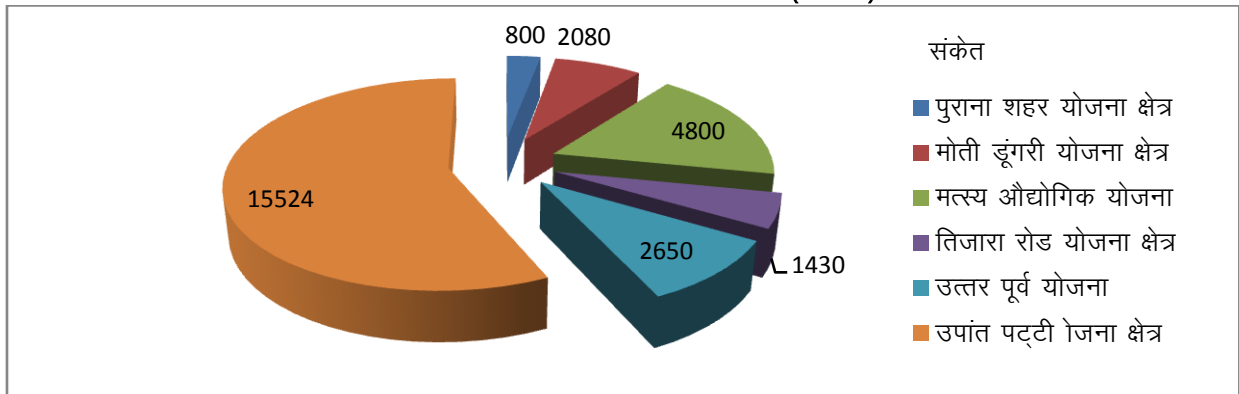
**अलवर शहर का भावी योजना क्षेत्र**

शहर के भावी विकास को योजनाबद्ध रूप से विकसित करने के उद्देश्य से नगरीयकरण योग्य क्षेत्र को 5 योजना क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इन योजना क्षेत्रों के निर्धारण में वर्तमान प्रतिरूप यथा प्राकृतिक एवं मानव निर्मित प्रमुख निर्माण एवं भविष्य में आने वाली आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को ध्यान में रखा गया है। रोजगार, आवास, वाणिज्यिक, सामुदायिक सुविधाओं की दृष्टि से नगरीयकरण योग्य क्षेत्र में प्रत्येक योजना क्षेत्र यथा सम्भव आत्मनिर्भर ईकाई के रूप में होंगे। विस्तृत नियोजन के लिए इन योजना क्षेत्रों को छोटे-छोटे उप क्षेत्रों में विभाजित कर सेक्टर प्लान के माध्यम से चरणबद्ध तरीके से विकसित किया जायेगा। प्रस्तावित नगरीयकरण योग्य क्षेत्र एवं अधिसूचित नगरीय क्षेत्र की सीमा के मध्य स्थित क्षेत्र की सीमा के मध्य स्थित क्षेत्र को उपांत पट्टी योजना क्षेत्र रखा गया है जो मुख्यतः ग्रामीण प्रकृति का होगा। इन सभी योजना क्षेत्रों का विवरण निम्नानुसार है—

**अलवर शहर का भावी योजना क्षेत्र 2031**

क्र.सं.	योजना क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
1	पुराना शहर योजना क्षेत्र	800
2	मोती झूंगरी योजना क्षेत्र	2080
3	मत्स्य औद्योगिक योजना क्षेत्र	4800
4	तिजारा रोड योजना क्षेत्र	1430
5	उत्तर-पूर्व योजना	2650
	कुल नगरीयकरण योग्य क्षेत्र	11760
6	उपांत पट्टी योजना क्षेत्र	15524
	कुल नगरीय क्षेत्र	27284

अलवर शहर के भावी योजना क्षेत्र का क्षेत्रफल (हेक्टेयर) 2031



प्रत्येक योजना क्षेत्र का सीमांकन नगरीय क्षेत्र के मानचित्र पर दर्शाया गया है, साथ ही इस मानचित्र पर गाँवों की सीमा वर्तमान विकसित क्षेत्र तथा प्रस्तावित विकसित शहरी क्षेत्र की सीमायें भी दर्शायी गयी है। प्रस्तावित प्रथम पांच योजना क्षेत्र वर्ष 2031 के मास्टर प्लान में प्रस्तावित नगरीयकरण योग्य क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए किया गया है। प्रस्तावित नगरीयकरण क्षेत्र के बाहर सम्पूर्ण अधिसूचित नगरीय क्षेत्र को सम्मिलित करते हुए एक उपांत पट्टी क्षेत्र प्रस्तावित है। इन योजना क्षेत्रों का विवरण निम्नानुसार है:

#### **पुराना शहर योजना क्षेत्र**

पुराना शहर योजना क्षेत्र, अलवर का वर्तमान मुख्य व्यावसायिक क्षेत्र है। दक्षिण में इसकी सीमा विनय मार्ग एवं पूर्व में रेलवे लाईन द्वारा निर्धारित है। पश्चिमी सीमा पहाड़ी तक सीमित है। इसकी उत्तरी सीमा जल रोड तक विस्तृत है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत पुराना किला क्षेत्र, लाजपत नगर, आर्य नगर, शिवाजी पार्क, विजय नगर, आवासन मण्डल की कॉलोनियाँ आदि शामिल है। इसी क्षेत्र में वर्तमान में जिलाधीश कार्यालय, बस स्टैण्ड, मुख्य व्यावसायिक केन्द्र, नगरपालिका कार्यालय आदि स्थित है। इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 800 हैक्टेयर है यह सम्पूर्ण क्षेत्र विकसित है।

#### **मोती डूंगरी योजना क्षेत्र**

मोती डूंगरी योजना क्षेत्र में विनय मार्ग के दक्षिण का सम्पूर्ण क्षेत्र एवं पूर्व में रेलवे लाईन के पश्चिम तक का सम्पूर्ण क्षेत्र सम्मिलित है। इस योजना क्षेत्र में पूर्व विकसित स्थल जैसे राजर्षि कॉलेज, मोती डूंगरी एवं उसके दक्षिण की विकसित कॉलोनियाँ सम्मिलित है।

इस योजना क्षेत्र में, दक्षिण की तरफ नया शहरी विकास प्रस्तावित है। अनवर के प्रमुख पर्यटन स्थल जैसे सरिस्का, भर्तृहरि, पांडूपोल, तालवृक्ष, जयसमन्द, सिलीसेढ को जाने वाला मार्ग, इसी क्षेत्र में स्थित होने के कारण, इस क्षेत्र में मुख्यतया पर्यटन आधारित उपयोग जैसे पर्यटन सुविधा केन्द्र, खेल गाँव, मनोरंजन क्षेत्र, क्षेत्रीय पाक आदि ही प्रस्तावित किये गये है। इस योजना क्षेत्र का क्षेत्रफल 2080 हैक्टेयर है।

#### **मत्स्य औद्योगिक योजना क्षेत्र**

दिल्ली रोड के दक्षिण एवं रेलवे लाईन के पूर्व का सम्पूर्ण क्षेत्र एक अलग योजना क्षेत्र के रूप में प्रस्तावित है। इटराना एवं मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र इस योजना क्षेत्र के वर्तमान प्रमुख भूमि-उपयोग है। इस क्षेत्र में नगर विकास न्यास की अम्बेडकर नगर एवं वैषाली नगर, दो प्रमुख आवासीय कॉलोनियाँ है। इस योजना क्षेत्र में आवासीय एवं औद्योगिक क्षेत्र के अतिरिक्त जिला व्यावसायिक केन्द्र, ट्रक स्टैण्ड, उच्च शैक्षणिक केन्द्र आदि प्रस्तावित है। इसका कुल क्षेत्रफल 4800 हैक्टेयर है।

#### **तिजारा रोड योजना क्षेत्र**

इस योजना क्षेत्र की दक्षिणी सीमा रेल मार्ग, पूर्वी सीमा, मथुरा रेलवे लाईन एवं पश्चिमी सीमा, पहाड़ी द्वारा निर्धारित होती है। उत्तर में इसकी सीमा प्रस्तावित बहरोड-तिजारा रोड की सम्पर्क सड़क तक है। इस क्षेत्र में बुद्ध विहार, गुल मोहर, दीनदयाल नगर, विज्ञान नगर, शालीमार नगर कॉलोनियाँ है। उक्त क्षेत्र भविष्य में नये

उत्प्रेरक तत्वों का प्रमुख केन्द्र होगा। इस क्षेत्र में नये शैक्षणिक संस्थान, सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र, प्रदर्शनी स्थल, चिकित्सालय एवं व्यावसायिक संस्थानों की स्थापना के लिए, पर्याप्त भूमि आरक्षित की गयी है। इसका कुल क्षेत्रफल 1430 हैक्टेयर है।

#### **उत्तर-पूर्व योजना क्षेत्र**

दिल्ली रोड के उत्तर एवं रेलवे लाईन के पूर्व का क्षेत्र इस योजना क्षेत्र में प्रस्तावित है। उत्तर में इस क्षेत्र की सीमा, मथुरा रेलवे लाइन तक विस्तृत है। इस क्षेत्र में अनाज मंडी, ट्रक स्टैण्ड, सूर्य नगर आवासीय कॉलोनी एवं दिल्ली रोड पर प्रस्तावित नयी आवासीय कॉलोनियाँ सम्मिलित है। इस योजना क्षेत्र में भवन सामग्री थोक बाजार, हार्डवेयर एवं मशीनरी बाजार, स्टोन मार्केट आदि प्रस्तावित है। इस योजना क्षेत्र के अन्दर ही प्रस्तावित द्रुतगामी रेल सेवा का स्टेशन यार्ड भी स्थित रहेगा। इस योजना क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 2650 हैक्टेयर है।

#### **उपांत पट्टी क्षेत्र**

नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर तथा अधिसूचित नगरीय क्षेत्र की सीमा के मध्य अनियन्त्रित एवं अनियोजित विकास को रोकने के लिए उपांत पट्टी योजना क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। इस क्षेत्र में स्थित ग्रामीण बस्तियों का विकास नियमित का नियोजित रूप से हो, इसके लिए प्रयास किये जाने आवश्यक है। ग्रामीण बस्तियों का विकास सम्बन्धित ग्राम पंचायतों द्वारा अपने नियन्त्रण एवं अधिकार क्षेत्र में राजस्थान पंचायती राज अधिनियम 1996 के तहत किया जा सकेगा। इस क्षेत्र में कृषि सेवा केन्द्र, राज्य मार्ग सेवा केन्द्र, ग्रामीण आबादी विस्तार, डेयरी व अवशीतन केन्द्र, पौधशालाएँ, रिसोर्ट फार्म हाउस, कृषि आधारित लघु उद्योग जैसे मिट्टी, क्रेशर, ईट व चूना आदि। राष्ट्रीय राजधानी योजना बोर्ड द्वारा लागू क्षेत्रीय योजना 2021 में अनुज्ञेय गतिविधियाँ या इनके अधीन बनाई जाने वाली उप क्षेत्रीय योजना या अन्य सम्बन्धित उपयोजनाएँ एवं राज्य सरकार द्वारा निर्दिष्ट उपयोजन आदि अनुज्ञेय होंगे। इस योजना का कुल क्षेत्रफल 15,524 हैक्टेयर है।

#### **निष्कर्ष**

प्रस्तुत शोधपत्र में अलवर शहर के नगरीय विकास का अध्ययन किया गया है। जिसमें शहर के वर्तमान तथा प्रस्तावित नगरीय क्षेत्र के नगरीय क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार वर्ष 2031 के प्रस्तावित नगरीकरण योग्य क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। अलवर शहर के वर्ष 2011 के मास्टर प्लान के अनुसार 2031 का शहर के भावी योजना क्षेत्र का उल्लेख किया गया है, जिसको मानचित्रण तथा आरेख की सहायता से सुशोभित किया गया है।

#### **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. बंसल सुरेश चन्द्र, (2017-18), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
2. तिवाड़ी आर.सी. (2014), अधिवास भूगोल, प्रवालिका प्रकाशन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश।
3. सक्सेना एच.एम., राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

## *Remarking An Analisation*

4. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, (2011), अलवर जिला, राजस्थान।
5. मास्टर प्लान (2011), नगर नियोजन विभाग, अलवर।
6. इम्पेरिकल गजेटियर ऑफ सलेक्टेड सिटीज ऑफ इण्डिया (2011), अलवर जिला, राजस्थान।
7. कुमार मनोज (2015), "स्मार्ट सिटी : योजना और तकनीकी पहलू", साइंटिफिक वर्ल्ड पत्रिका।
8. देशवाली शौकत अली (2016), "आधुनिक अधिवास प्रवृत्ति स्मार्ट सिटी-पर्यावरणीय चुनौतियाँ और सुस्थिर विकास" ज्योग्राफिकल ऑस्पेक्ट्स पत्रिका, राजस्थान।